ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 189-191

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

# भूमण्डलीकरण युग में गांधी दर्शन की उपादेयता

**अजय रावत**

असिस्टेन्ट प्रोफेसर–राजननीतिशास्त्र, सन्त शरण उत्कर्ष महिला महाविद्यालय, डोडो खजनी, गोरखपुर (उ0प्र0)भारत

**Received- 30.11. 2019, Revised- 06.12.2019, Accepted - 11.12.2019 E-mail: sk9450486118@gmail-com**

***सारांश :*** *21वीं सदी, पूँजीवादी की विजय एवं उदारीकरण, वैश्वीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप मानव के चरम विकास के रूप में देखी जा रही है। भूमण्डलीकरण के इस दौर में बाजार व्यवस्था हमारे जीवन पर प्रभावी हो चुका है। भौतिकता की आशक्ति ने हमारे नैतिक मूल्यों का लेप कर दिया है। साध्य प्रधान हो गया है, साधन की सूचिता समाप्त हो गयी ह"। आतंकवी हिंसक घटनाएं विश्वशांति के लिए चुनौती सिद्ध हो रही है। वैश्वीकरण के इस दौर में जंगलराज की अवधारणा को स्थापित करने की कोशिश की जा रही है। उदारवाद के नये रुप ने मानववाद को तिलांजलि देकर पूँजीपतियों को विश्व स्तर पर लूट की छूट दे दी है। पूँजीवादी साम्राज्य ने अफ्रीकी देशों को तहस–नहस कर दिया है। एशियाई देशों को जातीय नस्लीय एवं क्षेत्रीय टकराओं में उलझाए रखा है। जनवादी आन्दोलनों के खिलाफ यथास्थितिवाद का पोषण करने के लिऐ जालिम सरकारों को पूँजीवादी राज्यों का संरक्षण मिल रहा है। तथाकथित लोकतांत्रिक राज्य जनवादी मॉगों को हिंसक रुप से कुचल रहे हैं। आधुनिक हथियारों के निर्माण एवं इनकी बिक्री के लिये पॅजीवाद ने राज्यों को युद्ध के लिये भी प्रोत्साहित किया है।*

***कुंजी शब्द– पूँजीवादी, उदारीकरण, वैश्वीकरण, आतंकवादी, मानवतावाद, तिलांजली, जातीय, नस्लीय, जालिम।***

जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व आर्थिक क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का प्रवेश हो चुका है। बेरोजगारी बढ़ी है। ऐसी व्यवस्था का विकास हो रहा है, जहाँ सब कुछ बाजार तय करेगा। ऐसी स्थिति में सामाजिक सरोकारों की कीमत पर मुनाफाखोरी ही बढ़ेगी। आर्थिक उदारीकरण ने योजनाबद्ध ढंग से श्रमिकों के लोकतांत्रिक अधिकारों को क्षति पहुॅचायी है। जाति, धर्म, क्षेत्र की राजनीति करके समाज को तोड़ने का कार्य किया जा रहा है। जिससे कि पूॅजीवाद के दुष्परिणाम के विरूद्ध कोई संगठित जनवादी आन्दोलन न उभर पाये।

आज विश्व जगत निश्चित रुप से रेज की नींव पर खड़ा है। इसका कारण है विकट जातीय एवं धार्मिक विद्वेश जिनके परिणामस्वरुप ऐसे युद्ध शुरू हो सकते हैं। जिसका उदाहरण इतिहास में नहीं मिलेगा। नैतिक अथवा भौतिक दोनों मं से किस एक बल को चुनना है।

आज गॉधी के अनुयायी उनके विचारों और आदर्शों को तिलांजलि दे चुके हैं। आज प्रतिदिन जब गांधी की (विचारों की) हत्या हो रही है तो गांधी की उपादेयता का प्रश्न सामने आ रहा है। उनकी प्रसांगिकता का सवाल सामने आ रहा है। महात्मा मोहनचन्द करमचन्द गांधी का जीवन ही उनका दर्शन है। सत्य एवं अहिंसा गांधी दर्शन का मूल आधार है। गांधी जी ने मानव आत्मा के प्रति अपनी आस्था पर और सांसारिक विशयों में आध्यात्मिक मूल्यों और तकनीकों को लागू करने पर बल दिया। गांधी जी की सत्य के प्रति भक्ति ने ही उन्हें राजनीति में उतरने के लिये प्रेरित किया तथा उन्हें राजनीतिज्ञों में सन्त तथा सन्तों ने राजनीति बनाया। गांधी जी धर्म को राजनीति का एक अभिन्न हिस्सा मानते थे। उनका कहना था कि जो लोग यह कहते हैं कि धर्म का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है, वास्तव में धर्म के अर्थ को समझते ही नहीं। गांधी जी के शब्दों में, ''मैं उस ईश्वर के अलावा जो लाखों मूकजनों के हृदय में निवास करता है, अन्य किसी ईश्वर को नहीं मानता।'' गांधी मानव की सेवा को ही वास्तविक धर्म समझते थे। महात्मा गांधी के शब्दों में, ''मैं उस समय तक धार्मिक जीवन व्यतीत नहीं कर सकता था, जब तक कि स्वयं को सम्पूर्ण मानवता के साथ एकीकृत न कर लेता और यह मैं उस समय तक नहीं कर सकता था जब तक कि राजनीति में भाग नहीं लेता।'' धार्मिक कट्टरता का जो स्वरूप हमारे सामने है वह वास्तव में मानवता के विरूद्ध है। धार्मिक वर्चस्व व उन्माद ने धर्म के अर्थ को ही बदल दिया है। जहाँ मानवता नहीं है, सत्य नहीं है, वहॉ धर्म हो ही नहीं सकता। मानव क्रियाओं से पृथक कोई धर्म नहीं है।''

गांधी जी ने राजनीति में धर्म के प्रयोग से राजनीति का आध्यात्मीकरण किया। निःशस्त्र प्रतिरोध एवं सत्याग्रह की पद्धति का प्रयोग किया गया। महात्मा गांधी ने कोई वाद नहीं चलाया। समय–समय पर परिस्थितियों के अनुसार राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक विचार प्रकट किये। इन्हीं को संग्रह करके गांधीवाद का नाम दे दिया गया। गांधी जी ने स्वयं कहा था कि ''गांधीवाद नाम की कोई वस्तु नहीं है। मैं अपने पीछे कोई सम्प्रदाय छोड़कर नहीं जाना चाहता हूँ। मैं किसी नये मत को चलाने का

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

दावा नहीं करता। सत्य और अहिंसा उतने ही पुराने हैं जितने कि पर्वत। मैंने तो केवल दोनों को विस्तृत क्षेत्र मं प्रयोग करने का प्रयत्न किया है।

गांधी के विचारो की एक विशेषता यह है कि उन्होंने चिन्तन तथा कर्म में समन्वय स्थापित किया। उन्होंने जब यह कहा कि शारीरिक श्रम की महानता है तो उन्होंने स्वयं शारीरिक परिश्रम किया। जब वे कहते हैं कि अहिंसा और सत्य दिव्य मूल्य है तो उनका रूपान्तरण उन्होंने सत्याग्रह करके दिखाया। जब वे भ्रातृत्व को एक मूल्य बताया तब गरीबों की सेवा करके दिखाया। कर्मठता की ज्योति जलायी। उन्होंने धार्मिक अवधारणाओं को नैतिक कर्म में परिवर्तित कर इस औद्योगिक समाज में एक अनोखा कार्य किया। ऐसे परिवेश में गांधी की प्रासंगिकता बढ़ जाती है। गांधी जी मानते थे कि हिंसा से कोई समस्या हल नहीं होती। हिंसा केवल प्रतिहिंसा को जन्म देती है। अहिंसा विरोधी मन मस्तिष्क पर स्थायी पर स्थायी विजय दिलाने में समर्थ है। गांधी जी के शब्दों में अहिंसा का तात्पर्य अत्याचारी के प्रति नम्रतापूर्ण समर्थन नहीं है, वरन् इसका तात्पर्य अत्याचारी की मनमानी इच्छा का आत्मक बल के आधार पर प्रतिरोध करना है। अहिंसा को मानव जगत का सर्वोच्च नियम बनाते हुये गांधी जी का मत था कि अहिंसा के आधार पर ही एक सुव्यवस्थित समाज की स्थापना और भावी जीवन की उन्नति संभव है। महात्मा गांधी ने यंग इण्डिया में लिखा है कि स्वप्नदर्शी नहीं हूँ। मैं व्यावहारिक आदर्शवदी हूँ।'' गांधी जी का कहना था कि भारत गॉवों का देश है। गॉव विकास करेगा तो देश विकास करेगा। इसलिए वे शासन के स्वरूप को लोकतान्त्रिक बनाने के लिये गांव समाज की स्थापना पर बल देते थे। गॉव पंचायतें ही समस्त शासन को सत्ता का केन्द्र होनी चाहिए। ग्रामीण संरचना का हीविकास करके गांधी जी देश को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। गांधी जी व्यक्तिगत सम्पत्ति के समर्थक थे, परन्तु वे इसका प्रयोग स्वयं अपने लाभ के लिये नहीं वरन् उस सम्पत्ति का प्रयोग समाज हित में करने की बात करते थे। वस्तुतः उनकी सम्पत्ति का वास्तविक स्वामी समाज है, वे तो इस सम्पत्ति के संरक्षक के रुप में कार्य करेंगे। श्रम सभी के लिये अनिवार्य होगा। सभी को समान सामाजिक अधिकार प्राप्त होंगे। गांधी जी बड़े उद्योगों को समाप्त कर छोटे–छोटे लघु उद्योगों की स्थापना पर बल देते थे। प्रत्येक व्यक्ति उत्पादन एवं साधनों का स्वयं स्वामी होगा। आर्थक क्षेत्र में प्रतियोगिता, विरोध व शोषण को समाप्त कर दिया जायेगा। मशीनों को मानवीय श्रम के शोषण का साधन नहीं बनाया जायेगा। वे औद्योगिकरण के विरोधी थे।

गांधी जी मजदूरों एवं पूंजीपतियों में टकराव की जगह सहयोग की बात करते थे। गांधी जी पूंजीपति वर्ग को ट्रस्टी (संरक्षक) के रुप में कार्य करने की सलाह देते हैं। मजदूरों को पूंजीपतियों के संसर्ग में रहकर उनसे लाभ उठाना चाहिए। गांधी जी समस्त विश्व को एक परिवार समझते थे। विश्वबन्धुत्व की भावना रखते हुए वे राष्ट्रवाद के समर्थक थे। उनके आदर्श का विश्व अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति, सहयोग तथा मित्रता का था। वर्ण व्यवस्था का समर्थन करते हुये वे अस्पृश्यता का खात्मा चाहते थे। साम्प्रदायिक एकता पर बल देते थे एवं स्त्रियों की दशा में सुधार के कट्टर समर्थक थे। वे शिक्षा के क्षेत्र में रोजगार परक शिक्षा एवं मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने के पक्ष में थे। राजनीति में धर्म के सर्वाभौम नियमों सत्य, अहिंसा, प्रेम, सेवा आदि का पूर्ण रुप से पालन किया जाये। गांधी जी राजनीति से राजनीति के मान्य सिद्धान्तों–विग्रह–विघटन, विद्रोही आदि को समाप्त कर उसके स्थान पर सद्भावना, सहयोग, समन्वय की स्थापना चाहते थे। अपने अहिंसात्मक अस्त्रों–असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, हिजरत या प्रवजन, अनशन, हड़ताल केवल आन्तरिक क्षेत्र में ही नहीं वरन् विदेशी आक्रमण की स्थिति में भी सत्याग्रह का सुझाव दिया।

गांधी जी गीता, कुरान, बाइबिल से अच्छाइयों को निकालकर उसे मानव हित में प्रयोग करना चाहते थे। सत्य, अहिंसा उनके प्रमुख हथियार होंगे। हृदय परिवर्तन कर उसे सन्मार्ग परचलाना उनका लक्ष्य था। गांधी जी ने अपनी जीवन में इस धर्म का पालन किया। गांधी जी का आन्दोलन आजादी के लिये थे और जनता स्वतंत्रता के लिये सब कुछ न्योछावर करने को तैयार थी। गांधी जी के साथ जो आन्दोलन में शामिल जनता थी, उसका उद्देश्य भारत को अत्याचारी शासन से मुक्त कराना था।

लोकतंतत्र में सम्प्रभुता जनता में निवास करती है। इसलिए जनता की सामाजिक गतिशील ताकत ही सामाजिक बदलाव लाती है। गांधरी जी एक ऐसे नेता थे कि जो बड़े पैमाने पर जनता को संघर्ष के लिये लामबन्द कर सकते थे। साथ ही जनता की ओर से हिंसा के नाम पर संघर्ष को स्थगित कर सकते थे। असहयोग आन्दोलन इसका उदाहरण है। वैश्वीकरण, उदारीकरण के दौर में गांधी जी के सिद्धान्तों के अनुरुप छोटे लघु उद्योगों को बढ़ावा एवं बड़ी औद्योगिक इकाइयों को बन्द करने सा सुझाव अप्रसांगिक हो गया है। आज के बदलते विश्व में अर्थ की प्रधानता और समाज में व्याप्त अलगाववाद की भावना, हिंसा, आतंकवाद, बेगारी, भूख, आत्महत्या आदि समस्याओं के कारणों का निराकरण किये बिना शांति एवं आदर्श

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

समाज की कल्पना संभव नहीं है। इन समस्याओं के निदान का रास्ता भी जनवादी आन्दोलन ही हो सकते हैं जो मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिये यथार्थ की जीमन पर खड़े हों। गांधी जी निश्चित तौरपर एक महान क्रान्तिकारी जनवादी नेता थे जो स्थापित रूढ़ियां व शोषण की समाप्ति चाहते थे। आज हिंसक संघर्ष का कोई भविष्य नहीं है। राज्य की ताकत की तुलना में किसी संगठन या समूह की ताकत निश्चित ही कम रहेगी। वास्तविकता यह है कि राज्य की ताकत को परास्त नही किया जा सकता है। जनसामान्य के लिए हिंसा का मार्ग कभी सफल नहीं हो सकता, हिंसक गतिविधियों से राज्य को असीमित बल प्रयोग करने का अवसर मिल जाता है। यह सत्य है कि भारतीय राजनीति में, जातिवाद सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद, धार्मिक उन्माद, आंतंकवाद जैसी विनाशकारी काते जड़ जमा चुकी है। यदि कोई राज्य परमाणु शक्ति को संचित करता है तो वह संस्थागत आतंकवाद का उदाहरण है। क्या ये समस्याएं एक स्थायी प्रतिमान बन सकती है, अगर नही तो ये सब आत्मघाती सिद्धान्त है। गांधी के जीवन दर्शन में ऐसे सिद्धान्तों का कोई औचित्य नहीं। इस शताब्दी की राजनीति तथा त्रस्त मानवता के लिए गांधी एक मात्र उत्तर है। समकालिक चुनौतियों के लिए गांधी ही एक मात्र प्रासंगिक है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गांधी और गांधीवाद – डा0 बी0 पदुयाभिसीता रमैया हिन्दी अनुभाग–वेदराज वेदालंकार शिव लाल अग्रवाल एण्ड कं0 प्राइवेट लिमिटेड, आगरा–1957
2. जन जागरण की जरूरत – रमेश उपाध्याय, संज्ञा उपाध्याय (सम्पादक) शब्द संसाधन, प्रकाशन 2008, नई दिल्ली
3. वैश्वीकरण समर्थक बौद्धिक– कवलजीत सिंह अनुवाद जितेन्द्र गुप्ता संवाद प्रकाशन मेरठ–मुम्बई
4. छल का खुलासा भगत सिंह – अजय कुमार सम्पादक, उदभावना प्रकाशन, दिल्ली–2008
5. स्मृति में प्रेरणा, विचारों में दिशा यूटोपिया की जरूरत – रमेश उपाध्याय, संज्ञा उपाध्याय (संपादक), शब्द संसाधन, प्रकाशन 2008, नई दिल्ली
6. बपू की छाया में – बलवन्त सिंह, नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद–1957
7. महात्मा गांधी के विचार – आर0के0प्रभु, यू0आर0 राव नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया–1994, नई दिल्ली।
8. पं0 मोतीलाल नेहरू का– डा0 संजय यादव, राज पब्लिकेशन, दिल्ली
9. राजनीतिक अवदान रा0ट्रीय सहारा–हस्तक्षेप–17 फरवरी 2008
10. M.K. Gandhi - My Experiments with Truth
11. Dr. S. Radha Krishnan : Mahatma Gandhi-100 years.
12. J.B. Kriplani : Gandhi, Hist life and Thought
13. M.Gandhij, Harizon-2 March, 1934
14. M.K. Gandhi, towards Non-violent Socialism.
15. Sitaramyya, B.P. History of Indian National Congress.

*****